X)-0401

CLASS- X QUARTERLY EXAMINATION, JUNE 2025

कक्षा - X त्रैमासिक परीक्षा, जून 2025

QUARTERLY EXAM.

HINDI (MT)

मातृभाषा हिन्दी

पृष्ठ : 1/4

(समय : 3 घंटा 15 मिनट)

[Time : 3 Hour 15 Minutes]

विषय कोड/Sub. Code : 101

कुल मुद्रित पृष्ठ : 32

Total Printed Pages : 32

(पूर्णांक : 100)

[Full Marks : 100]

प्रत्येक प्रकार के प्रश्नों के अंतर्गत दिये गये निर्देशों का अनुसरण करें तथा उसके अनुसार उत्तर दें।

खण्ड – अ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

खण्ड-ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न दो अंकों का है। $5 \times 2 = 10$

(क) राजनीतिक दृष्टि से हिंदी साहित्य का 'आदिकाल' विदेशी आक्रमणों तथा राजनीतिक अस्थिरता का काल है। इस काल को 'वीरगाथाकाल' तथा 'सिद्ध-सामंतकाल' भी कहा गया है। इस काल में वीरगाथाओं के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा, जैनकाव्य, शृंगारकाव्य, सामान्य लोकाचारपरक कृतियाँ एवं मुक्तक गीतों की परंपरा भी मिलती है। इस काल के शृंगारकाव्य में 'वसंतविलास' नामक कृति का उल्लेख किया जाता है। इस काल की मुख्य रचनाओं के दो रूप मिलते हैं—प्रबंधकाव्य का साहित्यिक रूप तथा वीरगाथा का सहज रूप। चंदबरदाई-रचित 'पृथ्वीराजरासो' इस काल की प्रमुख प्रबंधात्मक कृति है। इसके अतिरिक्त इस काल में जगनिक द्वारा लिखा गया 'आल्हाखंड', गोरखनाथ की बानियाँ, चौरासी सिद्धों के दोहे और गीत, विद्यापति के गीत, खुसरो की पहेलियाँ एवं भाँति-भाँति काल के जैन चरितकाव्य मिलते हैं। इस काल की अन्य प्रसिद्ध कृतियाँ हैं—विजम्लालरासो, हम्मीररासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, बीसलदेवरासो आदि। इस काल में संस्कृत के वर्णवृत्तों के समानांतर मात्रिक छंदों का विकास हुआ। इस काल की कविता की भाषा ओजगुण प्रधान थी। इसमें अपभ्रंश से विकसित पुरानी हिंदी का रूप मिलता है। छप्पय, दोहा, गीत (आल्हा), पद्धरिया, त्रोटक आदि इस युग के प्रमुख छंद हैं। इस काल में गीत भी कविता की एक विशेष विधा बन गया जो सीधे लोककंठ से आई थी। इस काल में विरहकाव्य भी लिखा गया।

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दें—

(i) हिंदी साहित्य का 'आदिकाल' राजनीतिक दृष्टि से कैसा काल है?

(ii) 'आदिकाल' के अन्य नाम कौन-से हैं?

(iii) 'आदिकाल' में रचित 'वसंतविलास' कैसा काव्य है?

(iv) चंदबरदाई तथा जगनिक द्वारा रचित कृतियों के नाम बताएँ।

(v) इस काल की भाषा का विकास किस भाषा से हुआ है?

2. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न दो अंकों का है। $5 \times 2 = 10$

(क) बंगाल तथा बिहार के नील उत्पादक किसानों की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। विशेषकर बिहार में नीलहे गोरों द्वारा तीनकठिया व्यवस्था प्रचलित की गयी थी, जिसमें किसानों को अपनी भूमि के 3/20 हिस्से पर नील की खेती करनी होती थी। यह सामान्यत: सबसे उपजाऊ भूमि होती थी। किसान नील की खेती नहीं करना चाहते थे क्योंकि इससे भूमि की उर्वरता कम हो जाती थी। यद्यपि 1908 ई० में तीनकठिया व्यवस्था में कुछ सुधारे जाने की कोशिश की गई थी, परन्तु इससे किसानों की गिरती हुई हालत में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। बागान मालिक किसानों को अपनी उपज एक निश्चित धन राशि पर केवल उन्हें ही बेचने के लिए बाध्य करते थे और यह राशि बहुत ही कम होती थी। इस समय जर्मनी के वैज्ञानिकों ने कृत्रिम नीले रंग का उत्पादन करना शुरू कर दिया था जिसके परिणाम स्वरूप विश्व के बाजारों में भारतीय नील की माँग गिर गई। चम्पारण के अधिकांश बागान मालिक यह महसूस करने लगे कि नील के व्यापार में अब उन्हें अधिक मुनाफा नहीं होगा। इसलिए मुनाफे को बनाये रखने के लिए उन्होंने अपने घाटों को किसानों पर लादना शुरू कर दिया। इसके लिए जो रास्ते उन्होंने अपनाए उसमें किसानों से यह कहा गया कि यदि वे उन्हें एक बड़ा मुआवजा दे दें तो किसानों को नील की खेती से मुक्ति मिल सकती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने लगान में अत्यधिक वृद्धि कर दी।

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दें—

(i) नील उत्पादक किसानों की स्थिति कैसी थी?

(ii) किसान नील की खेती क्यों नहीं कराना चाहते थे?

(iii) 1908 ई० में क्या सुधार लाने की कोशिश की गई थी?

(iv) कृत्रिम नीले रंग का उत्पादन किसने शुरू कर दिया था?

(v) चम्पारण के बागान मालिक क्या महसूस करने लगे?

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-विंदुओं के आधार पर लगभग 250-300 शब्दों में निबंध लिखें। 10

(क) 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस)

(i) भूमिका (ii) पृष्ठभूमि
(iii) विशेषता (iv) कार्यक्रम (v) उपसंहार

(ख) राष्ट्रीय एकता

(i) भूमिका (ii) देश का भौगोलिक स्वरूप
(iii) संविधान में स्थिति (iv) जातिवाद प्रभाव (v) उपसंहार

(ग) सरस्वती पूजा

(i) भूमिका (ii) ज्ञान की देवी
(iii) विविध कार्यक्रम (iv) विसर्जन (v) उपसंहार

(घ) युवा पीढ़ी और नशीले पदार्थ

(i) भूमिका (ii) युवाओं पर दुष्प्रभाव
(iii) नशे के प्रकार (iv) सामाजिक बुराई (v) उपसंहार

(ङ) भारतीय किसान की समस्या और समाधान

(i) भूमिका (ii) सामाजिक समस्याएँ
(iii) आर्थिक समस्याएँ (iv) कृषि की स्थिति
(v) निष्कर्ष

4. प्रदूषण की समस्या को केन्द्र में रखते हुए दो मित्रों के बीच संवाद लिखें। 5

अथवा,

सत्संगति का महत्त्व बताते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लगभग 20-30 शब्दों में दें। $5 \times 2 = 10$

(क) श्रम विभाजन कैसे समाज की आवश्यकता है?

(ख) गुर्जर प्रतिहार कौन थे?

(ग) लेखक ने नया सिकंदर किसे कहा है और क्यों?

(घ) 'भारतमाता' कविता में भारत के किस रूप का उल्लेख है?

(ङ) जनता की भृकुटी टेढ़ी होने पर क्या होता है?

(च) 'हमारी नींद' कविता का संदेश क्या है?

(छ) मंगु को अस्पताल ले जाने के समय माँ की स्थिति कैसी थी?

(ज) बड़े अस्पताल के डॉक्टर ने पाप्पाति को किस रोग से ग्रस्त बताया?

(झ) देवनागरी में कौन-कौन भाषाएँ लिखी जाती हैं?

(ञ) छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हैं? 'हिरोशिमा' शीर्षक कविता के आधार पर स्पष्ट करें।

6. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए— 5

(क) 'काट दीजिए, वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे; पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति फिर छूटते ही सेंध पर हाजिर'
इसका अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

(ख) "सदियों की ठंढी-बुझी राख सुगबुगा उठी
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"
इन पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करें।

खण्ड-ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. (क)

(i) हिंदी साहित्य का 'आदिकाल' राजनीतिक दृष्टि से विदेशी आक्रमणों तथा राजनीतिक अस्थिरता का काल है।

(ii) 'आदिकाल' के अन्य नाम हैं— 'वीरगाथाकाल' तथा 'सिद्ध-सामंतकाल'।

(iii) 'आदिकाल' में रचित 'वसंतविलास' शीर्षक काव्य शृंगारकाव्य है।

(iv) चंदबरदाई ने 'पृथ्वीराजरासो' तथा जगनिक ने 'आल्हाखंड' लिखा।

(v) इस काल की भाषा (प्राचीन हिंदी) का विकास अपभ्रंश भाषा से हुआ।

2. (क)

(i) नील उत्पादक किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी।

(ii) तीनकठिया व्यवस्था के कारण आर्थिक स्थिति जर्जर हो रही थी, अत: खेती नहीं करना चाहते थे।

(iii) 1908 में तीनकठिया व्यवस्था में सुधार लाने की कोशिश की गई।

(iv) जर्मन वैज्ञानिकों ने कृत्रिम नीले रंग का उत्पादन शुरू कर दिया था।

(v) चम्पारण के बागान मालिक महसूस करने लगे कि नील के व्यापार में अब अधिक मुनाफा नहीं होगा।

3. (क) 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस)

भूमिका—गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) का भारतवासियों के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। सदियों की गुलामी से त्रस्त देशभक्तों ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्रता का शंखनाद किया। लाखों के बलिदान के पश्चात् दासता से मुक्ति मिली और गणतंत्र की स्थापना इसी दिन हुई।

पृष्ठभूमि—स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान अनेक नाजुक क्षण आए। किंतु गाँधीजी ने स्वाधीनता संग्राम को नया आयाम दिया। इसी बीच सन् 1929 ई॰ में पवित्र रावी के तट पर, लाहौर अधिवेशन में, तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्ष पं॰ जवाहरलाल नेहरू ने पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की। तभी से उस दिन (26 जनवरी)

स्वतंत्रता दिवस मनाया जाने लगा। किन्तु 1947 ई० में आजादी के बाद जब संविधान बना और वयस्क मताधिकार अंगीकृत हुआ तो 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

विशेषता—भारत में इस दिन का उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है जितना कि होली, दीपावली का हिन्दुओं के लिए, क्रिसमस का ईसाइयों के लिए तथा ईद, मुहर्रम, मुसलमानों के लिए। 26 जनवरी के दिन देश के सभी राज्यों की राजधानियों में बड़ी धूमधाम से विशेष समारोह आयोजित होते हैं। देश की राजधानी दिल्ली में राष्ट्रपति राष्ट्रध्वज फहराते हैं और सेना की टुकड़ियाँ सलामी देती हैं। फिर रंगारंग झाँकियाँ निकलती हैं जिनमें देश की प्रगति की झलक होती है। समाज और सेना के विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्य करने वालों के लिए पद्म अलंकारों की घोषणा होती है और बहादुर बच्चे एवं सैनिक सम्मानित किए जाते हैं।

कार्यक्रम—राज्यों की राजधानियों में राज्यपाल ध्वजारोहण करते हैं और सैनिक टुकड़ियाँ, छात्रवाहनियाँ सलामी देती हैं। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। राष्ट्रसेवा के लिए व्रत लिया जाता है।

उपसंहार—अतः हमें सतत् ध्यान रखना चाहिए। इस पवित्र तिथि का उद्देश्य कभी भी धूमिल न होने पावे और हम अपने गणतंत्र की बागडोर वैसे सच्चे प्रतिनिधि को ही सौंपें जिनसे देश का कल्याण हो।

4.

राजू — क्या हुआ शिवम, तुम उदास क्यों हो?

शिवम — राजू, मेरी माँ की हालत ठीक नहीं है।

राजू — क्या, हुआ उन्हें?

शिवम — हमारे शहर में इतना प्रदूषण हो गया है जिसकी वजह से माँ आज अस्पताल में भर्ती है।

राजू — उनको तो साँस की बीमारी है ना?

शिवम — हाँ मित्र, शहर की जहरीली गैस ने माँ के शरीर में ऐसा घर कर लिया कि उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।

राजू — हम छात्रों को प्रदूषण की समस्या का ठोस निदान निकालने के लिए सड़कों पर उतरना होगा, आंदोलन करना होगा। तभी लगता है सरकार जायेगी और शहर को प्रदूषण से मुक्ति मिल पाएगी।

शिवम — ठीक कहते हो मित्र।

अथवा,

अथवा,

राजेद्र नगर, पटना
18.02.2024

प्रिय मित्र राकेश

यथोचित

आशा नहीं पूर्ण विश्वास है कि तुम सकुशल होगे। अजीत कह रहा था कि तुम हॉस्टल के बाहर के लड़कों के साथ रहते हो। यह ठीक नहीं है। अच्छे लोगों के साथ रहो। सत्संगति से अच्छी आदतें सीखने को मिलती हैं। सत्संगति के कारण ही तुलसीदास, विवेकानंद जैसे महापुरुष महान बने हैं। अच्छा दोस्त वह नहीं जो कुसंगति प्रदान करे। अच्छा वह दोस्त है जो अपने साथी को सत्संगति का महत्त्व समझाए।

अतः तुम सत्संगति करो। यही तुम्हारे लिए ठीक रहेगा। अपनी पढ़ाई में ध्यान लगाओ और बातें अगले पत्र में होंगी।

तुम्हारा दोस्त
विकास

5. (क) समर्थन के आधार पर सभ्य समाज कार्यकुशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक अंग मानता है। जातिप्रथा श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है। यदि श्रम विभाजन न हो तो सभ्य समाज की परिकल्पना ही नहीं की जा सकती है।

(ख) इतिहासकारों की ऐसी मान्यता है कि गुर्जर-प्रतिहार ईसा की आठवीं सदी के पूर्वार्द्ध में बाहर से भारत आए थे और अवंती प्रदेश (उज्जैन, मालव प्रदेश) में अपना शासन स्थापित किया था। उसके बाद कन्नौज पर भी अधिकार कर लिया था। मिहिर भोज, महेंद्रपाल आदि प्रसिद्ध प्रतिहार शासक हुए।

(ग) लेखक ने भारतीय सिविल सेवा हेतु चयनित युवा अँगरेज अधिकारियों को 'नया सिकंदर' कहा है। लेखक का ऐसा कहना उचित है, क्योंकि उनकी नौकरी यहाँ भारत में पक्की थी। सिकंदर राजनीतिक जीत के लिए भारत आया था। वह विश्वविजेता बनना चाहता था और उसी क्रम में वह भारत आया था। नए अँगरेज अधिकारी 'सिकंदर' नहीं, 'नए सिकंदर' के रूप में लेखक द्वारा संबोधित किए गए हैं। अर्थात, लेखक राजनीतिक विजय के स्थान पर सांस्कृतिक विजय को महत्त्व दे रहा है। लेखक कहता है कि जिस तरह सर विलियम जोन्स ने भारत आकर प्राच्य देशों के इतिहास और साहित्य के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त की है, उसी तरह भारतीय सिविल सेवा हेतु चयनित युवा अँगरेज अधिकारियों को भी भारतीय इतिहास और साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सफलताएँ अर्जित करनी चाहिए, क्योंकि भारतीय इतिहास और साहित्य अपरिमित और अनंत है। इन क्षेत्रों में शोध और अनुसंधान के अनगिनत अवसर हैं।

(घ) कवि (सुमित्रानंदन पंत) ने भारतवासियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। भारतवासियों के तन पर पर्याप्त वस्त्र नहीं हैं, वे अधनंगे हैं। उन्हें कभी भरपेट भोजन नसीब नहीं होता। वे शोषित और निहत्थे हैं। वे मूर्ख, असभ्य, अशिक्षित और निर्धन हैं। वे असहाय और विवश हैं। ग्लानि और क्षोभ से उनके मस्तक झुके हुए हैं। वे निराश तथा लुटे

हुए हैं। रोना उनकी नियति है। उनमें धरती-सी सहनशीलता है। वे सब कुछ सह लेते हैं, उसका प्रतिकार नहीं करते।

(ङ) जनता की भृकुटी टेढ़ी होने पर शासन की नींब हिल जाती है भयानक स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसे संभालना सरकार के लिए कठिन हो जाता है।

(च) 'हमारी नींद' कविता में कवि ने चित्रित करते हुए दर्शाया है कि मानव में जागृति का अभाव है। समय की महत्ता को नहीं समझा जाता है साथ ही भौतिक विकास पर ही बल दिया जाता है। लेकिन प्रकृति की स्थिति कुछ और ही है। सृष्टि गतिशील है। इसे समझना होगा।

(छ) माँ को अस्पताल के कर्मचारियों पर विश्वास नहीं था। वह बराबर यही सोचती थी कि जन्म की पागल और गूँगी मंगु की अस्पताल में अच्छी देखभाल नहीं हो सकेगी और वहाँ उसकी मृत्यु हो जायेगी।

(ज) पाप्पाति स्ट्रेचर पर लेटी हुई थी। छह डॉक्टर उसे घेरे खड़े थे। बड़े डॉक्टर ने उसका परीक्षण किया और अपना निर्णय सुना दिया—इस रोगी को घोर मस्तिष्कावरण शोथ (मेनिनजाइटिस) है। बड़े डॉक्टर ने डॉ॰ धनशेखरन से कहा कि मैं ही इस पेशेंट (रोगी) की देखभाल करूँगा। आप इसकी भर्ती अस्पताल में करवा दें। डॉ॰ धनशेखरन ने यह भार श्रीनिवासन पर टाल दिया। श्रीनिवासन ने वल्लियम्मा (वल्लि अम्माल) के हाथ में एक चिट थमा दी।

(झ) देवनागरी लिपि में हिंदी, हिंदी की विविध बोलियाँ, नेपाली (खसकुरा), नेवारी एवं मराठी भाषाएँ लिखी जाती हैं।

(ञ) छाया प्रकाश के दिशा की विपरीत दिशा में बनती है। उगते हुए सूर्य के प्रकाश में छायाएँ पश्चिम दिशा की ओर बनेगी। पर, परमाणुबम के विस्फोट से निकले सूरज की रोशनी में मानवजन की छायाएँ दिशाहीन स्थिति में सब ओर पड़ीं। उस विस्फोट से एक ही साथ विभिन्न दिशाओं से अनेक सूरज उत्पन्न हुए जिनकी रोशनी में मानवजन की छायाओं को एक निश्चित दिशा में बनना संभव नहीं था। काल-सूर्य के रथ के पहियों के अरे दसों दिशाओं में बिखर गए थे, अतः मानवजन की छायाएँ दिशाहीन होकर सर्वत्र पड़ीं।

6\. (क) लेखक ने हमेशा बढ़ जानेवाले नाखूनों को निर्लज्ज अपराधी कहा है। इसके साथ ही उन अपराधियों को भी निर्लज्ज कहा है जो जेल से छूटने के बाद फिर चोरी करने के लिए सेंध मारने लगते हैं।

नाखून बार-बार काट दिए जाते हैं और वे बार-बार उग आते हैं। काटे जाने के समय ये चुपचाप दंड स्वीकार कर लेते हैं, पर कुछ समय बीतते ही ये पुनः उग आते हैं। इन्हें बार-बार दंड सहने में लज्जा का अनुभव नहीं होता। नाखून उन निर्लज्ज अपराधियों की तरह होते हैं जो चोरी करते समय पकड़े जाने पर जेल में डाल दिए जाते हैं, पर जेल से छूटते ही अपनी पुरानी बेइज्जती भूलकर वे फिर चोरी करने के लिए किसी के घर में सेंध मारने लगते हैं। उन्हें इसकी लाज नहीं होती कि पकड़े जाने पर उन्हें अपमानित या दंडित किया जाएगा।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रकवि 'दिनकर' रचित 'जनतंत्र का जन्म' शीर्षक कविता से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि ने जनता में आए जागरण का उल्लेख किया है। कवि कहता है कि युग-युग से प्रताड़ित-पीड़ित जनता अपना शैथिल्य त्यागकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने को उद्यत हो गई है। जिस तरह ठंढी-बुझी राख के भीतर कभी-कभी बची-खुची लघुकाय चिनगारी अचानक हवा का झोंका पाकर धधक उठती है, इसी तरह युग-युग से शोषित-प्रताड़ित जनता आज अपनी सारी निष्क्रियता त्यागकर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्षशील हो उठी है। तुच्छ समझी जानेवाली (मिट्टी) जनता ने अपने सतत संघर्ष से सत्ता पर अपना अधिकार जमा लिया है। राज्य शासन अब जनता के हाथों में है। इस स्थिति में जनता गर्व से फूली नहीं समाती।